पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

जिस प्रकार किसी शांत सरोवर में एक पत्थर फेंकते हैं, तो जिस स्थान पर पत्थर गिरता है, उस स्थान से जल तरंगें उठते हुए वृत्त के आकार में फैलती हैं। ये आपने देखा होगा। और ये चीज़ें खेल खेल में हम करते आये। ठीक वैसे ही मन एक बहुत बड़ा सरोवर है, जिसमें हमेशा कुछ न कुछ डाला जाता है जो हलचल पैदा करता है। जैसे ही मन में आपने संकल्प रूपी कोई भी पत्थर डाला, तो उसके वायब्रेशन्स एक वृत्त के आकार में चारो ओर फैलते जाते हैं। उस पत्थर को अगर हम बार-बार मन के सरोवर में डालें, अर्थात् उसकी बार-बार पुनरावृत्ति हो, या साधारण शब्दों में कहें कि संकल्प को बार बार दोहराया जाए तो वो एक विचार का रूप ले लेगा, और ये विचार तरंगें बहुत बड़े वृत्त का निर्माण करेंगी, इसमें शक्ति और गति का संचार होने लगेगा। उदाहरण के लिए जैसे आपने एक संकल्प डाला कि मैं महान हूँ, या मैं हेल्दी हूँ, लेकिन अंदर से आपको बहुत सारे संकल्प ऐसे भी चल रहे हैं कि मैं कहाँ हेल्दी हूँ, बीच बीच तबियत खराब होती रहती है, साथ साथ बहुत सालों का आपका ये अनुभव भी है कि बात तो सही है कि बीच बीच में तबियत खराब हो जाती है। फिर भी आपने मन में एक संकल्प डाला कि मैं स्वस्थ हूँ, वो पत्थर की तरंगें तो फैलेंगी ही, लेकिन जो पिछले बहुत सारे विचार हैं, उनको काटने के लिए बार बार इस पत्थर को डालना पड़ेगा कि मैं स्वस्थ हूँ, मैं स्वस्थ हूँ, मैं स्वस्थ हूँ। कहने का मतलब कि आप इस संकल्प रूपी पत्थर को इतनी बार डाल दो कि जो पुराने विचार हैं वो बिल्कुल नष्ट हो जायें। कहने का अर्थ यह है कि जब इस संकल्प में शक्ति और गति का संचार होगा, तब जाकर आपका मन इस बात को स्वीकार करेगा कि आप सच में हेल्दी हैं। इसी शक्ति एवं गति को या इससे युक्त विचार तरंगों को वृत्ति कहते हैं या मनोभाव कहते हैं, नज़रिया कहते हैं या दृष्टिकोण कहते हैं। अब यही वृत्ति ही हमारे भाग्य का निर्माण करती है या संकल्प सिद्धि करती है। वृत्ति जितनी शक्तिशाली होगी, उतनी ज़्यादा विचार तरंगों की शक्ति एवं गति भी शक्तिशाली होगी। इसका हम आपको एक और उदाहरण देना चाहेंगे, कि जो विचार तरंगें बहुत शक्तिशाली होती हैं, वही वायुमण्डल में या वातावरण में रेडियो एवं टीवी की फ्रिक्वेंसी की तरह फैल जाती हैं। कहने का मतलब कई बार हमको लगता है कि कोई भी संकल्प हम करते तो हैं, लेकिन वो सिद्ध नहीं होता, वो इसीलिए सिद्ध नहीं होता क्योंकि उसमें शक्ति और गति दोनों कम है। जब किसी चीज़ की शक्ति और गति दोनों बढ़ जाती है, तभी वो चीज़ हमारी होती है। इसीलिए ऋषि-मुनि लगातार एक मंत्र का उच्चारण करते रहते थे और वो उसको सिद्ध कर लेते थे। तो हमें भी अपने संकल्पों को सिद्ध करने के लिए बार बार उस संकल्प की पुनरावृत्ति करनी होगी और तब तक करनी होगी जब तक वो संकल्प, और सभी संकल्पों पर भारी न पड़ने लग जाये।

कई बार हमें ये संकल्प आता है कि कैसे संकल्पों को सिद्ध करें? और सभी इसी बात को लेकर परेशान रहते हैं कि हम कुछ ऐसा करें कि कुछ चमत्कार हो जाये, जल्दी से जल्दी संकल्प सिद्ध हो जायें। तो इसका क्या तरीका हो सकता है? हमने वैसे तो प्रयोग किए हुए हैं, उस प्रायोगिक सिद्धान्त को ही आपके सामने रखने की कोशिश करेंगे कि कैसे हम संकल्पों को सिद्ध करें।

मन शक्तिशाली इसीलिए कहा जाता है क्योंकि जो कोई नकारात्मक संकल्प होता है आज के समय में, वो ऑटोमेटिक चलता है, उसको चलाने के लिए कोई प्रयास नहीं करना पड़ता, क्योंकि वातावरण में, विचार तरंगों में सिर्फ और सिर्फ नकारात्मक बाते हैं, जो उसको सपोर्ट करती हैं। इसलिए आज हमें ज़्यादा प्रयास करना पड़ रहा है। तो मन की अद्भुत शक्ति का प्रयोग करने के लिए हम इस विधि को अपनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-22(2017-2018)

1			2		■	3	4		5
	■	■		■	6	■		■	
■	7			■		■	8	9	
10		■	■	11			■		■
	■	12				■	13		14
■	■		■		■	15	■	■	
16			■		■	17	18	19	
	■	20	21	■	22				■
23		■	24	25		■		■	26
	■	27			■	■	■	28	

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ पेपर पर उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज़्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजेताओं की लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. दशरथ का एक बेटा (2)
2. प्राचीन,...दुनिया से बुद्धियोग निकाल नई दुनिया से लगाना है (3)
4. चमत्कारिक खेल, जादूगरी (3)
5. बिचौलिया, हमें अपना बुद्धियोग शिवबाबा से लगाना है ब्रह्मा से नहीं, ब्रह्मा तो सिर्फ...है (3)
6. आलीशान, खूबसूरत, बहुत अच्छा (4)
7. संसार, दुनिया (2)
9. उदाहरण, उपमा (3)
10. ...के राही थक मत जाना, निशा (2)
11. लम्बी दौड़, दादी जी की स्मृति में होने वाली एक प्रतियोगिता (4)
12. पुरूषार्थ, कर्म (4)
14. धनुष, बागडोर (3)
15. समुदाय, दल, समूह, सभा (3)
16. दुर्बल, शक्तिहीन, निर्बल (4)
18. प्रतिलिपि, अनुकृति, ज्यों का त्यों (3)
19. दुशाला, ओढ़ने का बड़ा कपड़ा (2)
21. उत्पन्न, संतान, संग्रह (3)
22. चाह, इच्छा, कामना (2)
25. पैर, नर्क को... लगानी है (2)
26. वर्ष, 12 मास का समय (2)

बायें से दायें

1. रावण की दुनिया, यह दुनिया अभी...है, तुम्हें रामपुरी में चलना है (5)
3. मन-मुटाव, वैचारिक भिन्नता (4)
7. जन्म देने वाली, माँ, माता (3)
8. सम्मिलित, इकट्ठा (3)
10. सुर, ताल, ईर्ष्या, द्वेष (2)
11. यह दुनिया युद्ध का...है बड़ी सावधानी रखनी है, क्षेत्र (3)
12. वाद-विवाद, कहा-सुनी (4)
13. क्षणिक दर्शन,...तुम्हारी ओ प्यारे भगवन (3)
16. नज़दीकी, पास वाला (3)
17. इज्जत, कलियुगी झूठे...की इच्छा नहीं रखनी (2-2)
20. छुट्टी, अनुमति, सहमति (2)
22. वर्तमान, आद्य, इन दिनों (4)
23. उमंग-उत्साह, आवेग (2)
24. खोज, ढूंढ़ना, खोजबीन (3)
27. बल, शक्ति, ज़ोर (3)
28. केश, बच्चा, बालक (2)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन

खरगोन-म.प्र। राज्यपाल महोदया आनंदी बेन पटेल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. किरण। साथ हैं जिला कलेक्टर शशिभूषण सिंह, जिला भारत कृषक समाज के जिलाध्यक्ष ब्र.कु.भरत यादव तथा अन्य।

शिकोहाबाद-उ.प्र। ज्ञानचर्चा के पश्चात् डी.एम. नेहा शर्मा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. पूनम तथा ब्र.कु.नीतू।

आगरा-उ.प्र। क्रीड़ा भारती एवं जिला प्रशासन द्वारा होटल वैभव पैलेस में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कार्यक्रम आयोजन में सहयोगी सदस्यों के सम्मान समारोह के दौरान समूह चित्र में खेल मंत्री एवं क्रीड़ा भारती के प्रमुख चेतन चौहान, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. वंदना, ब्र.कु. रीना तथा अन्य।

दिल्ली-लोधी रोड। इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, भारत सरकार की नवरत्न कंपनी में योग से निरोग विषयक संगोष्ठी के पश्चात् समूह चित्र में कार्यकारी निदेशक गणेश प्रसाद, ब्र.कु. पीयूष, ब्र.कु. गिरिजा तथा प्रतिभागी।

दिल्ली-पालम। सेवाकेन्द्र में आने पर दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की स्थायी समिति के अध्यक्ष भूपेन्द्र गुप्ता को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सरोज।

लंडन-हाउंस्लो। सेवाकेन्द्र पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. भाई बहनों के साथ ब्र.कु. विजय बहन।